चलो... आज हम अपना भाग्य लिखते हैं

एक मोची से इतने बड़े संत बनने की कहानी, जो काम निचले तबके का कर रहा है, सबको कांटें न चुभें, इसके लिए वो चरण पादुकाएं बनाता है, अगर शब्दों के साथ खेला जाए तो चरण पादुका से लगता है कि कितनी ऊँची चीज़ बना रहा है, लेकिन यदि कोई कह दे, वो मोची है, छोटी जाति का है, तो उस शब्द से ही सबकी भावना बदल जाती है। कहने का मतलब यह हुआ कि संत रविदास, जो बिल्कुल साधारण और सामाजिक स्थिति में छोटी जाति के कहे गये, लेकिन उनके सामने बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी झुकते थे। वो क्या करते थे या कहते थे, दोनों बातों पर गौर करके पता चला कि कोई इतनी मेहनत का काम वो नहीं करते थे कि सभी उनके सामने नतमस्तक हों लेकिन उनके काम और उनके नाम लेने के तरीके में फर्क था। हम इसको चरणबद्ध तरीके से समझते हैं।

पहला चरण, हमारी भाषा। जब हम किसी के बारे में बात करते हैं तो हमारे शब्दों के भाव और उसके साथ भाषा, दोनों की तारतम्यता व्यक्ति के व्यक्तित्व को दर्शाती है। जैसे हम आप बातचीत की भाषा में बोल देते हैं कि मैं जा रहा था, रास्ते में फलाना व्यक्ति मिला था। वहीं एक संत, एक रॉयल व्यक्ति बोलेगा, कि वो रास्ते में हमें मिले थे। आप दोनों के भाव और भाषा को देखिये, दोनों के वायब्रेशन को देखिये। जो बोलने वाला है, उसका भाग्य स्वयं के लिए बदल गया, क्योंकि उसकी आत्मा के अंदर उस चीज़ की रिकॉर्डिंग ज़बरदस्त हुई। क्योंकि जिसके लिए वो बोल रहा है, वो व्यक्ति है नहीं, जो उसको सुनाई दे, सुनने वाला भी मैं और बोलने वाला भी मैं। तो भाग्य किसका बना? हमारा। तो हम सबको भाव और भाषा दोनों बदलने हैं। अगर हमारा भाव सही है तो हमारे शब्द निश्चित रूप से अच्छे ही निकलेंगे। इससे हमारा भाग्य उस व्यक्ति के साथ-साथ उसके परिवार के साथ-साथ जहाँ-जहाँ वो जाता है उसके साथ-साथ ऊँचा होता चला जायेगा। ऐसे ही दुनिया के संत हुए, जो किसी के लिए भी अपशब्द, कड़वी भाषा, कड़वे वचन नहीं बोलते थे। इसीलिए आज हम उनका नाम लेते हैं तो बड़े सम्मान से लेते हैं, क्योंकि उन्होंने भाषा सही इस्तेमाल की। कभी किसी को नीचा नहीं दिखाया।

दूसरा चरण, हमारा व्यवहार। व्यवहार बदलने के दो आधार हैं। पहला, कुछ देख लिया, दूसरा, किसी ने आपको कुछ सुना दिया। इन दो आधारों से ही सभी का व्यवहार बदल जाता है। मनोविज्ञान कहता है कि जो हम देखते हैं, वो

> भाग्य की जवाबदारी यह है कि जब हम किसी के बारे में बात करते हैं तो हमारे शब्दों के भाव और उसके साथ भाषा, दोनों की तारतम्यता व्यक्ति के व्यक्ति त्व को दर्शाती है। जो हम देखते हैं, वो क्षणिक है और जो किसी ने आकर सुनाया वो एक पहलू है। जब हम कोई भी कर्म कर रहे होते हैं, कर्म के आधार से हमारी पहचान बन जाती है। लेकिन उस कर्म के पीछे की मंसा हमारे भाग्य का निर्माण करती है।

क्षणिक है और जो किसी ने आकर सुनाया वो एक पहलू है और हमारा अनुभव कहता है कि कई बार व्यक्ति उलझा होता है अपने-अपने संस्कारों में। कोई बात उसके अंदर चल रही होती है, उसके आधार से वो व्यवहार करता है। अब इसमें फर्क वृत्ति का है, हमारे नज़रिये का है, हमारे दृष्टिकोण का है। व्यक्ति का बाहरी आवरण उसके मन के अंदर चलने वाले विचारों का रिफ़्लेक्शन या प्रतिबिम्ब है। इसीलिए ज़रूरी नहीं है कि जो आपने देखा वो सही ही है। इसलिए जो हम देखते हैं, जो हम सुनते हैं, दोनों ही बातों को पहले परखना है, समझना है, तब व्यवहार बदल सकते हैं। लेकिन संत महात्मा जो दुनिया के भी हुए, वे भी हमेशा कहते रहे, कि वो उनका व्यवहार है, हमारा व्यवहार तो संतों वाला ही होना चाहिए। तो अगर हमने व्यवहार कभी नहीं बदला, वैसे का वैसा व्यवहार सबके साथ करते रहे, चाहे वो उल्टा बोले, ऊपर-नीचे बोले, फिर भी आपका व्यवहार नहीं बदले तो आपका भाग्य व्यवहार के साथ ऊँचा होता जायेगा या नहीं! इसलिए व्यवहार के आधार से भी भाग्य अति श्रेष्ठ व शक्तिशाली बन जाता है।

तीसरा चरण, हमारा स्वयं का कर्म। जब हम कोई भी कर्म कर रहे होते हैं, कर्म के आधार से हमारी पहचान बन जाती है। लेकिन उस कर्म के पीछे की मंसा हमारे भाग्य का निर्माण करती है। मंसा को अगर अंग्रेजी में कहें तो होता है इंटेंशन। इंटेंशन मतलब आशय, भाव। तो हर कर्म के पीछे हमारा जैसा इंटेंशन होता है, उसके आधार से कर्म में बल आता है, उसके आधार से भाग्य बनता है। उदाहरण के लिए, हम सभी जब कोई कर्म करते हैं तो उसके पीछे का भाव सफलता का आधार है। संत रविदास के लिए कहा जाता है कि वो कर्म भले मोची का करते थे लेकिन स्थिति बहुत ऊँची थी। उनकी एक कहावत बहुत मशहूर है, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। इसका सीधा-सा अर्थ है कर्म के पीछे का भाव। क्या भाव लेने का है, लूटने का है, किसी को धोखा देने का है, लोभ वृत्ति का है या सुखदाई भाव है, वो भाव हमारे भाग्य को बनाता है। तो भाग्य की कलम देखो कैसे हमारे साथ फुल टाइम रहती है लेकिन लिखना शायद हमें नहीं आता, इसीलिए भाग्य हमसे छूटता जाता है। इसीलिए जब तक हम अच्छा बोल नहीं सकते, देख नहीं सकते, अच्छा कर्म नहीं कर सकते, तब तक भाग्य हमारे कलम में ताकत के आधार से आयेगा ही नहीं। इसीलिए आपको किसी ज्योतिषी से ये बात पूछने की आवश्यकता नहीं कि हमारा भाग्य क्यों खराब है। हमारा भाग्य खराब नहीं है, हम सोच कर, उल्टे-पुल्टे कर्म करके अपना भाग्य खराब कर रहे हैं। इसीलिए भाग्य को बदलना हमारे हाथ में है।

! यह जीवन है !

संसार में जो अच्छे लोग हैं, वे सदा विनम्र होते हैं। उनकी विनम्रता से वे स्वयं भी शांत रहते हैं और दूसरों को भी सुख-शांति प्रदान करते हैं। परंतु सब लोग ऐसे नहीं होते। कुछ लोग इसके विपरित बहुत अधिक अभिमानी होते हैं, उनके चिंतन का ढंग विरुद्ध ही होता है, क्योंकि अभिमान के कारण उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

जब बुद्धि का नाश होता है, तब आप स्वयं सोच सकते हैं कि उस व्यक्ति का चिंतन और निर्णय सही कैसे हो सकता है?

इसलिए हमेशा याद रखना कि हमारा ये दिमाग कचरे का डिब्बा नहीं, जिसमें हम क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान और जलन रखें, दिमाग तो एक खज़ाना है जिसमें हम प्यार, सम्मान, ज्ञान, विज्ञान, मानवता, दया जैसी बहुमूल्य चीज़ें रख सकते हैं।

नई दिल्ली-लोधी रोड। डॉ. रणदीप गुलेरिया,निदेशक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरिजा दीदी।

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में गौरव फाउण्डेशन द्वारा 'भारत गणराज्य में युवाओं की भूमिका' पर चर्चा के साथ भारत युवा पुरस्कार का द्वितीय संस्करण नई दिल्ली स्थित होटेल शंगरी ला एरॉस में आयोजित किया गया। समारोह में अहमदनगर के डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को भारत के प्राचीन राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए 'भारत गौरव युवा पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए केन्द्रीय आवास एवं शहरी मामलों के राज्यमंत्री कौशल किशोर। इस मौके पर राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. दीपा दीदी,काठमांडू नेपाल एवं राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. सुनीता बहन,दिल्ली उपस्थित रहे।

सेंधवा-म.प्र.। पूर्व पशुपालन राज्यमंत्री अंतरसिंह आर्य को रक्षासूत्र बांधने व परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया बहन, ब्र.कु. राधा बहन तथा ब्र.कु. हरीश भाई।

नई दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। विधायक मदन लाल जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. अनुज भाई तथा अन्य।

राय पिथौरागढ़-उत्तराखण्ड। हेमंत पाण्डेय,डी.आर.डी.ओ. साईंटिस्ट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कनिका।

रीवा-म.प्र.। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।

आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। विधायक जितेन्द्र वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि बहन।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। सिटी पुलिस स्टेशन,वडोदरा की पुलिस इंस्पेक्टर यू.जे. जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। साथ हैं सीनियर पी.आई. वी.आर. वानिया तथा ब्र.कु. वंदना बहन।

पटना-खाजपुरा। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान,पटना में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. प्रभात कुमार सिंह, डॉ. वीना सिंह,बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी, मोहन कुमार,वित्तिय सलाहकार, प्रो. सी.एम. सिंह,चिकित्सा अधीक्षक तथा सभी डॉक्टर्स और स्टाफ को स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजू बहन ने रक्षासूत्र बांधा तथा रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य भी बताया। इस मौके पर ब्र.कु. रविन्द्र भाई, ब्र.कु. सिंधु बहन तथा ब्र.कु. मीरा बहन भी उपस्थित रहे।